'बाल उत्सव'–एक संक्षिप्त रिपोर्ट

अंजुला सागर*

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद् की संघठक ईकाई के रूप में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान का प्रमुख सरोकार विद्यालयी बच्चों और शिक्षकों के लिए शैक्षिक वीडियो-ऑडियो कार्यक्रमों का विकास, कम लागत वाली सामग्रियों का निर्माण, और तकनीकी कार्यों में कर्मिकों का प्रशिक्षण, मूल्याँकन-संबंधी शोध का आयोजन, प्रलेखन, सूचनाओं और सामग्रियों का प्रसार तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी के व्यवहार और विकास संबंधी परामर्श प्रदान करना है।

संस्थान द्वारा निर्मित शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों का प्रसारण डी.डी.-1 और ज्ञानदर्शन चैनल पर हिंदी में विभिन्न आयु वर्ग और स्कूली अवस्थाओं के बच्चों के लिए 'तरंग' शीर्षक के अंतर्गत प्रसारित किया जाता है। प्रतिदिन (सोमवार से शुक्रवार) इन कार्यक्रमों का प्रसारण डी.डी.-1 पर 55 मिनट और ज्ञानदर्शन चैनल पर 3 घंटे 40 मिनट का होता है। इसी प्रकार रेडियो कार्यक्रमों का प्रसारण 'उमंग' के नाम से 30 मिनट प्रतिदिन 14 हिंदी ज्ञानवाणी रेडियो एफ एम चैनल पर किए जाते हैं। ये कार्यक्रम विद्यालयों में पढ़ने वाले हर स्तर के बच्चों के लिए होते हैं।

स्कूल कैलेंडर में 'ग्रीष्म कालीन अवकाश' बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण समय है जिसमें बच्चे अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न कार्यकलापों में अपनी प्रतिभा निखार सकते हैं। इन अवकाश के दिनों में बच्चों को चाहिए एक अवसर जिसमें वे अपनी छुपी हुई सृजनात्मकता, कला और अभिव्यक्ति को रूप दे सकें, निखार सकें और इस दिशा में मार्गदर्शन पा सकें।

इन्हीं उद्देश्यों के मद्देनज़र केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान ने गर्मी की छुट्टियों में एक 'बाल उत्सव' का आयोजन किया। बाल उत्सव यानि बच्चों के लिए आयोजित मेला जिसमें वे अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न गतिविधियों तथा

**क्षेत्र निरीक्षक*, केंद्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली.

कार्यशालाओं में भाग ले सकें और नई-नई कलाएँ और कौशल सीख सकें। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के प्राँगण में इस वर्ष ग्रीष्म कालीन अवकाश में बाल उत्सव 17 मई से 11 जून 2010 तक आयोजित किया गया। इस बाल उत्सव में विभिन्न विषयों पर निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया—

- कम्प्यूटर पाठशाला
- कठपुतली संचालन कला
- रेडियो से परिचय
- टी.वी. प्रोग्रामिंग से परिचय
- कार्टून कला से परिचय
- सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित शैक्षिक कार्यक्रमों का बच्चों द्वारा मूल्याँकन

इन कार्यशालाओं का संचालन, समन्वयन तथा आयोजन संस्थान के ही संकाय सदस्यों, कार्यक्रम निर्माताओं तथा अन्य तकनीकी सदस्यों द्वारा किया गया। इसमें संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) से निरंतर मार्गदर्शन मिलता रहा। इस बाल उत्सव का समग्र समन्वयन डा. अनूप राजपूत द्वारा किया गया। इन कार्यशालाओं का विस्तृत विवरण इस प्रकार है।

कम्प्यूटर पाठशाला — *(कार्यशाला समन्वयक श्री नरेन्द्र सिसोदिया)* यह कार्यशाला 17 से 21 मई 2010 को आयोजित की गई। इसमें कुल 15 बच्चों ने भाग लिया जो कि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के थे। 'सॉफ्टवेयर', 'स्कूल ओ. एस.' के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। बच्चों ने इस सॉफ्टवेयर में स्वयं कार्य करना सीखा तथा नई-नई जानकारियाँ हासिल कीं।

कठपुतली संचालन कला — *(कार्यशाला समन्वयक श्री राजेश निर्मेश और श्री प्रमोद शर्मा)* यह कार्यशाला तीन समूहों में 17 से 21 मई 2010 तथा 31 मई से 04 जून 2010 (सुबह और शाम दो बैच) को आयोजित की गई। इसमें कुल 50 बच्चों ने भाग लिया जो प्राथमिक से माध्यमिक कक्षाओं के थे। इसमें कागज़ और बचे हुए कपड़ों की कतरनों द्वारा तरह-तरह की कठपुतलियाँ बनाना सिखाया गया। हर प्रतिभागी बच्चे ने मन पसन्द कठपुतली बनाई। इन कठपुतलियों को बच्चों ने दैनिक जीवन से जोड़कर उन्हें तरह-तरह की कहानियों में पिरोया जिसमें बच्चों की स्वयं भागीदारी रही और उन्होंने खूब आनन्द लिया। बच्चों के अनुसार कठपुतलियों के चेहरे नए-नए ढंग से बनाना और सजाना उन्हें बहुत अच्छा लगा। इसमें बच्चों की सृजनात्मकता निखरकर सामने आई। प्रत्येक बच्चे ने स्वयं 2-3 कठपुतलियाँ बनाई। बच्चों की कठपुतलियों का इस्तेमाल कर मंचित की गई कहानियों की सी.आई.ई.टी. द्वारा विडियों रिकार्डिंग भी की गई।

रेडियो से परिचय — *(कार्यशाला समन्वयक डा. कामिनी भटनागर और श्री अजीत होरो)* यह कार्यशाला 25 से 28 मई 2010 को आयोजित की गई इसमें कुल 14 बच्चों ने भाग लिया जो कि प्राथमिक से माध्यमिक कक्षाओं के थे। इसमें बच्चों ने वे विषय पहचानना सीखा जिन पर वर्तमान परिपेक्ष्य में आलेख लिखे जा सकें, तत्पश्चात उन्होंने चुने हुए विषयों पर 'आलेख' लिखना सीखा। उसपर उन्होंने चर्चाकर संशोधित आलेख रेडियो कार्यक्रमों के लिए तैयार किए।

दूसरे चरण में बच्चों ने कार्यक्रम रिकॉर्डिंग करना सीखा। कार्यक्रम की रिकॉडिंग से जुड़े विभिन्न पहलुओं को बच्चों ने देखा और समझा। कार्यक्रम के दौरान और बाद में बच्चों ने बताया कि ये काम करना उनके लिए अद्‌भुत था। आश्चर्यजनक रूप से इस कार्यशाला में बच्चों द्वारा 15 रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण किया गया। यह कार्यक्रम विभिन्न सामाजिक मुद्दों जैसे जेंडर सरोकार इत्यादि पर बनाए गए।

टी.वी. प्रोग्रामिंग से परिचय— *(कार्यशाला समन्वयक श्री मनोज शुक्ल और श्री वाई.के. गुप्ता)* यह कार्यशाला 31 मई से 11 जून 2010 को आयोजित की गई जिसमें वीडियो आलेख लेखन, कैमरा संचालन करना व अन्य संबंधित तकनीकियों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इसमें कुल 16 बच्चों ने भाग लिया जो कि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के थे। बच्चों ने आलेख तैयार किए, स्वयं उस पर रिकॉडिंग, अभिनय कर कुल तीन वीडियो कार्यक्रम बनाएँ इसमें बच्चों ने किशोरों की समस्याओं पर एक बहुत अच्छा विडियों तैयार किया।

कार्टून कला से परिचय— *(कार्यशाला समन्वयक श्री डा. अनुभूति यादव)* बच्चों को कार्टून बहुत पसंद हैं, यह सत्य किसी से छिपा नहीं। पर यह एक कला और कौशल है, जिससे अवगत करवाया गया इस कार्यशाला में। यह कार्यशाला 31 मई से 4 जून 2010 को आयोजित की गई जिसमें बच्चों ने कार्टून के माध्यम से अपनी बात कहने की कला को सीखा। इसमें कुल 17 बच्चों ने भाग लिया जो कि प्राथमिक से माध्यमिक कक्षाओं के थे। बच्चों ने विभिन्न सामाजिक तथा व्यक्तिगत पहलुओं पर 'कॉमिक्स' बनाए प्रत्येक बच्चे ने दो-दो कॉमिक्स तैयार किए और 'कॉमिक्स' पर बच्चों ने विशेषज्ञों से पढ़वाकर उनकी प्रतिक्रिया भी प्राप्त की। प्रदूषण और पशु-पक्षियों के प्रति सरोकार वाले कॉमिक्स इस कार्यशाला का आकर्षण रहे।

सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित शैक्षिक कार्यक्रमों का बच्चों द्वारा मूल्याँकन— *(कार्यशाला समन्वयक डॉ. अंजुल सागर)* केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान पिछले कई दशकों से बच्चों के लिए और अन्य पणधारियों के लिए कार्यक्रम बनाता रहा है। ये कार्यक्रम अक्सर व्यस्कों द्वारा बनाए जाते हैं और उनके द्वारा ही मूल्याँकित किए जाते हैं। इस कार्यशाला द्वारा यह प्रयास किया गया कि बच्चों के परिपेक्ष्य इन कार्यक्रमों के संबंध में जाना जाएँ इसलिए माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं के बच्चों को अवसर दिया गया कि संस्थान द्वारा निर्मित कार्यक्रमों को अपने नजरिए से मूल्याँकित करें। यह कार्यशाला 24 से 26 मई 2010 को आयोजित की गई। इसमें 23 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य था संस्थान द्वारा बच्चों के लिए बनाए गए शैक्षिक ऑडियो-विडियो कार्यक्रमों पर बच्चों की प्रतिक्रिया, सुझाव प्राप्त करना और उनकी रुचि और रुझान को समझना ताकि भविष्य में नए कार्यक्रमों का निर्माण उसी के अनुसार किया जा सके। कुल 12 कार्यक्रमों का अवलोकन करवाया गया जिसमें 6 वीडियो और 6 ऑडियो कार्यक्रम थे। मुक्त वार्ता सत्र में बच्चों ने खुलकर अपने विचार प्रकट किए कुछ मुख्य बातें उनके अपने शब्दों में—

- *"मेघा द्वारा रोने वाला भाग संशोधित होना चाहिए क्योंकि वीरता की बात सुनकर जोश आता है, रोना नहीं।" (ऑडियो कार्यक्रम मेजर सोमनाथ शर्मा)*
- *"कार्यक्रम में दिखाए गए सभी उदाहरणों ने विषय अच्छे से उभारा। ये उदाहरण हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं।" (वीडियो कार्यक्रम* ***क्रिया-प्रतिक्रिया)***

इन सभी कार्यशालाओं ने बच्चों के लिए सीखने के उत्सव के रूप में तो कार्य किया ही साथ ही इससे जुड़े संस्थान के सभी सदस्यों और अन्य संस्थानों के आमंत्रित विशेषज्ञों के लिए भी यह एक उत्सव सरीखा अनूठा अनुभव रहा। समापन सत्र में बच्चों को उनकी भागीदारी का प्रमाण पत्र *निदेशक*, प्रो. जी. रविन्द्रा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् तथा *निदेशक*, सुश्री अमिता शॉ बाल भवन द्वारा दिया गया। इस सत्र में उपस्थित एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक, सचिव, सी.आई.ई.टी. की संयुक्त निदेशक, संकाय सदस्य तथा अन्य सदस्यों ने बच्चों के अनुभवों को सुना, सराहा तथा उन्हें अपने आशीर्वचनों से अभिभूत किया। सभी ने बच्चों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन कार्यक्रमों के निरंतर आयोजन की आवश्यकताओं पर बल दिया।